निमंत्रण तथा शुभ सूचना

सैयद कुतुब की किताब " फी ज़िलालिल कुरआन "

से चयित

अनुवादक:

मुहम्मद शरीफ

COOPERATIVE OFFICE FOR CALL AND GUIDANCE IN AL-BATHA
(UNDER THE SUPERVISION OF THE MINISTRY OF ISLAMIC AFFAIRS)
P.B.No 20824 - Riyadh 11465 K.S.A.
Tel. 4030251 - 4083405 FAX. 4059387

30

निमंत्रण तथा शुभ सूचना

सैयद कुतुब की किताब " फी ज़िलालिल कुरआन "
से चयित

अनुवादक:
मुहम्मद शरीफ

ح المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالبطحاء، ١٤١٧هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

قطب، سيد

دعوى وبشرى / ترجمة محمد شريف .- الرياض.

٢٤ ص؛ ١٧X١٢ سم

ردمك ٠-٣٨-٧٩٨-٩٩٦٠

١- الدعوة الإسلامية ٢- الوعظ والإرشاد أ- العنوان

ديوي ٢١٣ ١٧/٢٠٦٧

رقم الإيداع: ١٧/٢٠٦٧

ردمك: ٠-٣٨-٧٩٨-٩٩٦٠

UNDER THE SUPERVISION OF
MINISTRY OF ISLAMIC AFFAIRS,
ENDOWMENTS, PROPAGATION AND GUIDANCE

Tel.: 4030251 - 4034517 - 4030142 - 4031587 Fax : 4059387
P.O. Box : 20824 Riyadh 11465

© All rights reserved for the Office
No part of this book may be used for publication without the written permission of the copyright holder, application for which should be addressed to the office

निमन्त्रण तथा शुभ सूचना

यह एक निमन्त्रण है सब लोगों को कि वह भली भाँति इस मार्ग पर चलें जो पवित्र, सच्चा, अच्छा, फलदायक और सही मार्ग दर्शन करने वाला तरीका है जो सयंमियों का तरीका है।

कुरआन में अल्लाह ने कहा है –

"ऐ लोगो अपने पालनहार की आज्ञापालन करो जिसने तुम्हें और उन लोगों को जो तुम से पहले आये थे, जन्म दिया इसलिए कि तुम सयंमी बन जाओ, जिसने तुम्हारे लिए धरती को फर्श तथा आकाश को छत बनाया और आकाश से वर्षा को उतारा फिर इसके द्वारा तुम्हारी रोजी के लिए फल आदि उत्पन्न किया, इसलिए तुम अल्लाह का भागीदार किसी को न बनाओ और यह तुम जानते ही हो"।

यह सब मनुष्यों को उनके पालनहार की आज्ञा पालन करने का निमन्त्रण है, जिसने उन्हें और उनसे पहले के लोगों को अकेले ही जन्म दिया। इसलिए यह आवश्यक है कि इस एक अल्लाह की उपासना की जाए। उपासना का एक लक्ष्य है कि लोग इस लक्ष्य तक पहुँचें इस उपासना को कार्य में लायें।

" इसलिए तुम संयमी बन जाओ "

इसलिए कि तुम उस तरीके की ओर वापस जाओ जो मानव जीवन के विभिन्न तरीकों में सबसे अच्छा है, जो अल्लाह की उपासना करने वालों का तरीका, अल्लाह से डरने वालों का तरीका है, तो इस प्रकार उन्होंने अपने जन्म तथा पालन के अधिकार को चुका दिया। उस एक ईश्वर की पूजा की, जो है और जो बीत गये सब लोगों का पालनहार तथा सब मनुष्यों को जन्म देने वाला है और जो बिना किसी भागीदारी धरती तथा

आकाश से उनको रोज़ी देने वाला है।

" जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया "

यह एक प्रकार का वर्णन है जो इस धरती पर मानव जीवन के प्रति इसकी बनावट में सरलता की ओर इशारा करता है कि वह उनके लिए आराम वाला निवास गृह तथा बिछौने के समान सुरक्षित शरण गृह बन जाए और लोग हैं कि इस बिछौने को जो अल्लाह ने उनके लिए तैयार किया है, कालांतरित से इसके आदि होने के कारण से भूल जाते हैं। इस उपयोगिता को जो ईश्वर ने धरती पर रखी है कि वह उनके लिए जीवन के साधनों में उपयोगी हों और आराम करने की सहजता तथा इस सामान को भी भूल जाते हैं जो अल्लाह ने उनके लिए धरती को उनके जीवन के अनुसार कर दिया है और अगर यह निर्माणकारी न होती तो इस धरती पर उनका जीवन इस सहजता तथा चैन के साथ न बीतता और अगर इस धरती पर जीवन के अंश में से कोई

अश कम हो जाता तो ये लोग इस वातावरण के अतिरिक्त जो उनके लिए जीवन का प्रमाण होता है, दूसरे वातावरण में नही रह पाते । और अगर वायु में कुछ कमी इसके निर्धारित मात्रा में होती तो लोगों के लिए सांस लेना भी कठिन होता यद्पि उनके लिए जीवन सीमित कर दिया गया है।

" और आकाश को छत बनाया "

इस में निर्माण की मज़बूती तथा सुन्दरता है। उसका भूमि पर मानव जीवन और इस जीवन की सुविधा से गहरा सम्बन्ध है। वह अपनी गर्मी, प्रकाश, आकर्षण, क्रमांक, धरती तथा आकाश के बीच पाए जाने वाले सब सम्बन्धों के द्वारा धरती पर जीवन का अस्तिव को संभव करता तथा उसकी सहायता करता है। बस यह कोई निराली बात नही है लोगों को जन्म देने वाले की शक्ति, रोज़ी देने वाले की दया और ईश्वर को बन्दों (दासों) की ओर से उसके पूजनीय होने का सब से

विशेष कारण से आज्ञा करते हुए इसका विवरण किया जाए।

"और आकाश से पानी को उतारा फिर उसके द्वारा तुम्हारी रोज़ी के लिए कई प्रकार के फल आदि उत्पन्न किए।"

कुरआन में कई स्थानों पर आकाश से पानी उतारने और उसके द्वारा फल आदि उत्पन्न करने का विवरण, ईश्वर की शक्ति और उपकारों के द्वारा आज्ञा के समय पर आता रहता है। और आकाश से उतरने वाला यह पानी धरती के सब ही प्राणियों के जीवन का महत्व साधन है। जिससे जीवन अपने सब रूपों तथा कई प्रकार के साथ फलती फूलती है।

"और हमने प्रत्येक जीवित वस्तु को पानी से बनाया।"

चाहे यह पानी सीधा धरती के कणों से मिलकर कृषि उत्पन्न करे अथवा दरिया समुद्र बना दे एवं धरती के पर्तों में शोषित हो जाय फिर इसके साथ धरती के भीतर का पानी मिल जाए जो झरनों के रूप में फूट पड़ता है अथवा कूंओं को खोदकर निकाला जाता है अथवा यन्त्रों के द्वारा समभूमि पर फिर लाया जाता है। और धरती में पानी के मौजूद होने तथा मानव जीवन में इसका महत्व तथा जीवन के विभिन्न रूपों में उपयोग होना ऐसी बात है जिस में विवाद की संभावना व आवश्यकता नही है। सृष्टिकर्ता, रोज़ी देने वाला और बहुत-बहुत देने वाली हस्ती की पूजा का आमन्त्रण के बारे में इसके द्वारा याद दिलाना काफी है। और इस आमन्त्रण तथा एलान में इस्लामी जीवन व्यतीत करने के दो मौलिक सूत्र उभर कर सामने आते हैं।

१. सब प्राणियों के सृष्टिकर्ता का एक होना।

"वह जिसने तुमको तथा तुमसे पहले वालों को जन्म दिया।"

२. सृष्टि का एक होना तथा उसकी इकाईयों का एक दूसरे से जुड़ा होना और जीवन तथा मानव के लिए उसका आवश्यक होना।

"वह जिसने तुम्हारे लिए धरती को फर्श तथा आकाश को छत बनाया और आकाश से पानी उतारा फिर इसके द्वारा तुम्हारी रोज़ी के लिए कई प्रकार के फल आदि उत्पन्न किये।"

इस संसार की धरती मनुष्य के लिए बिछाई गई है। इसका आकाश एक विधि के साथ बनाया गया है जो पानी के द्वारा धरती की सहायता करता है, जिससे लोगों के लिए फल आदि निकलते हैं, इन सब वस्तुओं में दया व श्रेष्ठता केवल एक सृष्टिकर्ता की है।

"बस तुम अल्लाह का कोई भागीदार न बनाओ जबकि तुमको इसकी जानकारी है।"

उसको तुम जानते ही हो कि उसी ने तुम्हारे लिए धरती को फर्श तथा आकाश को छत बनाया। आकाश से पानी उतारा। उसका कोई भागीदार नही जो सहायता करे और न कोई ऐसा है जो उसका हाथ पकड़े या बाधा डाले। यह जानने के बाद भी उसके साथ किसी को भागीदार बनाना एक अनुचित कार्य है।

वह साझेदार जिन से कुरआन कड़े शब्दों के साथ रोकता है कि एकेश्वरवाद (तौहीद) का विश्वास पवित्र तथा स्वच्छ रहे। वह केवल ऐसे ही साझेदार नहीं होते हैं जिनकी अल्लाह के साथ साधारण प्रकार से पूजा की जाती है और जिसकी शिर्क करने वाले अभ्यस्त तथा आदी हैं बल्कि यह साझेदार दूसरे गुप्त रूपों में भी पाए जाते हैं। कभी अल्लाह के सिवा दूसरे के साथ विभिन्न प्रकार से आशाएं

बांध लेने, कभी उनसे विभिन्न प्रकार से भय तथा आकांक्षा करने में और कभी अल्लाह के सिवा दूसरे से लाभ व हानि का भिन्न प्रकारों से विश्वास रखने में भी होते हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास का वर्णन है कि हज़रत मुहम्मद स॰अ॰व॰ ने कहा, "साझेदारों का विश्वास शिर्क ही है जो रात के अन्धेरे में काले चट्टान पर चींटी की चाल से अधिक गुप्त होता है।"

इसका उदाहरण यह है कि कहें "अल्लाह के और तेरे जीवन की सौगंध", "ऐ मनुष्य तेरे और मेरे जीवन की सौगंध" या इस प्रकार कहें "यदि यह कुत्ता नही होता तो रात को चोर अवश्य हमारे पास आते"। "और बत्तख न होती तो चोर अवश्य आते"। और मनुष्य का अपने मित्र से कहना "अल्लाह जो चाहे और तु जो चाहे" मनुष्य का इस प्रकार कहना अल्लाह और तु ऐ मनुष्य न होता –" यह सब बातें ईश्वर के साथ शिर्क ही हैं, और

हदीस में आया है।

एक मनुष्य ने हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से कहा – " अल्लाह जो चाहे और आप जो चाहें " जो हज़रत मुहमम्द स०अ०व० ने कहा क्या तुने मुझ को अल्लाह का भागीदार बना दिया "।

उस युग के पूर्वज गुप्त शिर्क और अल्लाह के साथ साझेदार बनाने को इस प्रकार से देखते थे। अब हम देखें कि इस प्रकार के विचार करने से हम कितनी दूर हैं और एकेश्वरवाद की सबसे बड़ी सच्चाई से हम कितनी दूर हैं।

यहूदी हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के दूत (रसूल) होने के बारे में संशय उत्पन्न करते थे, और उन लोगों ने जिनके हृदय में कुछ और होते और बताते कुछ और इस विषय में शंका में पड़ गये थे जैसा कि शिर्क करने वालों ने संशय किया था, मक्का आदि में शंकाएं फैलाया करते थे, तो यहाँ कुरआन ने उन सबको

ललकारा है क्योंकि वह सब ही लोगों से कहता है, एक कामयाब अनुभव के द्वारा उनको ललकारा है जो बिना किसी विवाद के उस विषय का न्याय कर दे।

"अगर तुम इस चीज़ की ओर से शंका में पड़े हो जो हमने अपने बन्दे (हज़रत मुहम्मद स॰अ॰व॰) पर उतारी है तो इस जैसा एक पद (सुरत) ले आओ और अल्लाह को छोड़कर अपने सब सहकार्यों को बुलालो यदि तुम सच्चे हो"।

और इस ललकार का एक ऐसे पहलु से आरंभ होता है जिसका इस स्थान पर एक विशेष महत्त्व है वह यह है कि हज़रत मुहम्मद स॰अ॰व॰ की विशेषता, ईश्वर का बन्दा (दास) होना वर्णन करना है।

"और अगर तुम इस वस्तु की ओर से शंका में हो जो हमने अपने बन्दे पर उतारा है"

इस स्थान पर इस गुण से कई सही व सच्ची बातें सामने आती हैं। पहला तो यह कि हज़रत मुहम्मद स॰अ॰व॰ अल्लाह के बन्दे होने के सम्बन्ध से हज़रत मुहम्मद स॰अ॰व॰ का बड़ा होने और निकट होना इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह की पूजा करने का कार्य सब से सर्वश्रेष्ठ कार्य है कि इसकी ओर मनुष्यों को आमन्त्रण दिया जाना चाहिए और इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद स॰अ॰व॰ को पुकारा जाए और दूसरी बात सब मनुष्यों को उनके एक अल्लाह की उपासना और इसके सिवा सब साझेदारों को छोड़ देने के आमन्त्रण में ईश्वर की भक्ति पूजा व आज्ञापालन का अर्थ व सारांश का प्रमाण है।

तू देख कि यह नबी (परम ज्ञानी) हैं जो ईश्वर के आदेशों को लोगों तक पहुँचाते हैं और जो बड़े पद पर हैं उनको अल्लाह का दास के सम्बन्ध से पुकारा जा रहा है और इस बड़े पद पर होने पर भी हज़रत मुहम्मद स॰अ॰व॰ को अल्लाह का दास कहकर ही पुकारा जाता है।

अब रहा यह ललकार करना तो इस में पद के प्रारम्भिक पूजा व आज्ञापालन का अर्थ व सारांश का प्रमाण है।

वाक्यों को ध्यान में रखते हैं, इसलिए कि यह किताब जो उतारी गई है अक्षरों से बनी हुई है जो उनके सामने है बस अगर वह उनके अतिरिक्त दूसरे लोग इसके खुदा की ओर से उतारे जाने पर शंका करते हैं तो वह इस जैसी एक पद बना लायें और अल्लाह के सिवा इनको भी बुला लें जो उनकी इसमें सहायता करें, अल्लाह ने तो अपने बन्दे के अभियोग को सच्चा होने का प्रमाण दिया है। यह ललकार हज़रत मुहम्मद स॰अ॰व॰ के जीवन में भी रहा और हज़रत मुहम्मद स॰अ॰व॰ के बाद भी और आज इस दिन तक भी शेष है और यह एक ऐसी दलील है जिसमें विवाद की कोई संभावना नही है और कुरआन हर उस बात से जो मनुष्य कहते हैं पूरा अलग है। यह निम्न पद ईश्वर के आदेश के अनुसार

ऐसा ही अलग रहेगा।

"यदि तुम ऐसा न कर सके और कभी भी नही कर सकोगे तो बचो इस आग (नरक) से जिस का ईन्धन मनुष्य तथा पत्थर होंगे जो काफिरों के लिए तैयार की गई है"

यहाँ यह ललकार भी निराली है और इसका न होना और निराला है। यदि इसका झूठा कहना उनके वश में होता तो एक क्षण की भी देर न करते। इसमें शंका की गुंजाइश नही है कि कुरआन का कथन है कि वह कभी नही कर सकेंगे ! अमल से भी सिद्ध हो चुका है। जैसा कि उन्होंने स्वयं इसका प्रमाण दिया है, यह एक ऐसा चमत्कार है जिसमें वाद विवाद की कोई गुंजाइश नही है। मैदान तो इनके समक्ष खुला हुआ था, वह अगर ऐसी वस्तु प्रस्तुत करते जो इस आखरी एलान को तोड़ देता तो कुरआन के अभियोग के स्वत्व का भवन गिर जाता। परन्तु ऐसा हुआ नही और ऐसा हो भी नही सकेगा।

यह ललकार तो सब मनुष्यों की एक वंश के समक्ष हुआ था, और केवल यही एतिहासिक निर्णायक बात है।

इसके अतिरिक्त हर वह मनुष्य जो वर्णन के सुन्दर प्रकार के स्वाद को समझने की योग्यता रखता है और वह मनुष्य जो सृष्टि तथा वस्तुओं के बारे में मानवी कल्पनिकता की सूचना रखता है और वह मनुष्य जो जीवन के नियम, तरीकों, अकेला तथा समुदाय के कल्पनाओं से जो मनुष्य आविष्कार करता है, जानता है उसको इस बारे में ज़रा भी सन्देह तथा शंका नही होगा कि कुछ और ही वस्तु है, "इस प्रकार ही नही जो मनुष्य घड़ता है और इस में शंका केवल सत्य तथा असत्य को मिला देने के कारण ही से उत्पन्न होती है। और यहाँ से यह मालूम होता है कि यह भयानक धमकी उन लोगों के लिए है जो इस ललकार का उत्तर देने से विनीत हों फिर भी इस प्रकाशित सच्चाई पर ईमान न लाते हों।

"बस डरो उस आग से जिसका इन्धन मनुष्य तथा पत्थर है वह काफिरों के लिए तैयार की गई है ।"

तो क्या अर्थ है इस तरीके से मनुष्यों तथा पत्थरों को एक साथ करने का जो इस तरीके में आतंक उत्पन्न कर देता है असल में ये आग काफरों के लिए तैयार की गई है, जिन के गुण पद के आरम्भ में इस प्रकार से वर्णन किया गया है।

"अल्लाह ने उनके हृदयों पर मोहर लगा दी और उनके कानों और उनकी आखों पर पर्दा है"

जिनको कुरआन ने यहाँ ललकारा है तो वह विवश हो जाते हैं और कोई उत्तर नही दे पाते हैं तो वे पत्थरों के समान हैं। यद्पि शक्ल व सूरत के अनुसार मनुष्य हैं।

असली पत्थरों तथा मनुष्यों के पत्थरों का एक जैसा

होने का विषय है। परन्तु यहाँ पत्थरों का वर्णन संयम में भयानक दृश्य की एक दूसरी निशानी की ओर इशारा कर रहा है, यह नरक का वह दृश्य है जिसमें आग पत्थरों को खा जाती है। और दूसरा दृश्य पत्थरों का वह दृश्य है जिनको नरक में वह पत्थर (आक्रमण कर रहे) होंगे और इस भयानक दृश्य की तुलना में दूसरा दृश्य प्रस्तुत किया जाता है, वह है इन उपहारों का दृश्य जो ईमान रखने वालों की प्रतीक्षा में है।

"और उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे कार्य करते हैं, यह शुभ सूचना सुना दो कि उनके लिए ऐसे पुष्पोधान हैं जिनके नीचे से नहरें बह रही होंगी, जब भी उनमें से कोई फल उन्हें खाने को दिया जाएगा तो वे कहेंगे ये तो वही है जो पहले दिया गया था और उन्हें उसी प्रकार का दिया गया होगा और उनमें उनके लिए पवित्र पत्नियां होंगी और वे उसमें सदा रहेंगे।"

यह सब नाना प्रकार के उपहार हैं उनमें विशेष पवित्र पत्तियां हैं, दृष्टि उनकी ओर से गुजर कर उन फलों पर रूक जाती है जो एक दूसरे से मिले जुले होंगे, ऐसा विचार आएगा कि वह इससे पहले उन्हें दिये गये थे, अथवा संसार के फलों से मिले जुले होंगे जो पहले उन्हें दिये गये थे, इस लिए कि उपरी शक्ल और भीतर वाली शक्ल में हर बार एक आश्चर्य कर देने वाली विशेषता होगी। वहाँ मन मोह लेने वाला वातावरण मिलेगा और उपरी साहश्य तथा भीतर वाली अद्भूत विशेषताएं ईश्वर की आश्चर्य कर देने वाली रचना व निर्माण तथा शक्ति की खुली निशानी है, जो सृष्टि को उस के दिखाई देने वाले की तुलना में वास्तविक आधार पर बड़ा बना देती है। यदि हम केवल मनुष्य का ही उदाहरण लें तो, जो इस बड़ी सच्चाई को बता देगी जो गुप्त है। सब मनुष्य एक ही प्रकार की आकृति के हैं, सब को सर है, शरीर है, हाथ पाँव हैं, मांस, लहू, अस्थि, स्नायु, दो आँखें, दो कान, मुख तथा जीभ है। जीवित आकृतियों वाली वस्तु में कुछ

जीवित आकृतियां हैं जो शक्ल में एक जैसी हैं परन्तु विशेषताओं तथा दोषों में कितना अन्तर है और फिर स्वाभावों तथा योग्यताओं में कितना अन्तर है। कभी तो मनुष्य के बीच इस सादृश्य के बावजूद धरती और आकाश का अन्तर होता है।

इस प्रकार ईश्वर की कारागरी की सरूपता इतनी आश्चर्य चकित होती है कि मनुष्यों की बुद्धि को घुमा देती है। विभिन्न प्रकारों तथा आकारों में समरूपता तथा शक्लों और निशानियों में विभिन्नता, विशेषताओं तथा गुणों में विभिन्नता आदि, इन सब का असल में एक ही जो आकृति तथा क्रमांक में एक जैसी है।
अब कौन है जो अल्लाह की पूजा न करे, क्योंकि उसकी निर्माणकारी तथा उसकी शक्ति की निशानियां स्पष्ट हैं। और कौन है जो अल्लाह के साझेदार तथा भागीदार बनाए जब कि खुली तथा गुप्त वस्तुओं में उसकी शक्ति का प्रमाण उसकी निशानियों में स्पष्ट है।

هذا الكتاب يحتوي على:

* دعوة إلى عبادة الله سبحانه وتعالى.
* التحذير من الشرك.
* إعجاز القران الكريم.
* بشرى للمؤمنين بالجنة.

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد
وتوعية الجاليات في منطقة البطحاء

تحت إشـــراف
وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد

ص.ب: ٢٠٨٢٤ الرياض ١١٤٦٥
هاتف: ٤٠٣٠٢٥١
٤٠٣٠١٤٢
٠٠٩٦٦-١- ٤٠٣٤٥١٧
٤٠٣١٥٨٧
فاكس: ٤٠٥٩٣٨٧

هاتف وفاكس صالة المحاضرات بالبطحاء
٠٠٩٦٦-١- ٤٠٨٣٤٠٥

حقوق الطبع محفوظة للمكتب

لا يسمح بطبع أي جزء من هذا الكتاب إلا بعد مراقلة خطية مسبقة من المكتب

COOPERATIVE OFFICE FOR CALL AND GUIDANCE IN AL- BATHA

UNDER THE SUPERVISION OF
MINISTRY OF ISLAMIC AFFAIRS,
ENDOWMENTS, PROPAGATION AND GUIDANCE

PO. BOX:20824 RIYADH.11465

00966-1 — 4030251
4034517
4031587
4030142
FAX — 4059387

Lecture hall. Tel + Fax: 00966- 1- 4083405

© All rights reserved for the Office

No part of this book may be used for publication without the written permission of the copyright holder, application for which should be addressed to the office

دعـوة وبشـــرى

باللغة الهندية

مقطع
من كتاب في ظلال القرآن
لسيد قطب

ترجمة

محمد شريف
الأستاذ بجامعة دار الهدى - حيدر أباد

دعوة وبشرى

باللغة الهندية

مقطع

من كتاب في ظلال القرآن

لسيد قطب

ترجمة

محمد شريف

الأستاذ بجامعة دار الهدى - حيدر آباد

برنامج

وفرعها في السماء

دعوة للمساهمة في دعم

خمسة أنشطة للمكتب

بمبلغ خمسين ريال

توزع كالتالي :

١٠ كفالة داعية

١٠ رحلات تعليمية

١٠ صدقة جارية

١٠ تبرع عام

١٠ طباعة كتب

للمساهمة في البرنامج

الايداع في الحساب رقم ٤/ ٦٣٩٠ فرع ١٨٥ الراجحي وإرسال صورة الإيداع على فاكس المكتب : ٤٠٥٩٣٨٧

أو التكرم بالحضور إلى مقر المكتب أو التحويل عن طريق الصراف الآلي إلى الحساب رقم ١٨٥٠٠٦٣٩٠٤

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالبطحاء

تحت إشراف وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد

هاتف : ٤٠٣٠٢٥١ - ناسوخ : ٤٠٥٩٣٨٧ - ص.ب ٢٠٨٢٤ - الرياض ١١٤٦٥